आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12 अंक : 2 अक्टूबर, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

कुलपति सन्देश

स्वच्छ भारत निर्माण जनभागीदारी से ही संभव

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन से राजस्थान में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है अर्थात 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2024 तक ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान चलाया जा रहा हैं, जिसके तहत राज्य सरकार भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इस अभियान में स्वच्छता और पर्यावरण स्थिरता पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इस वर्ष इस अभियान की थीम ''स्वभाव स्वच्छता–संस्कार स्वच्छता'' है। स्वच्छ पर्यावरण और आदर्श जीवन शैली के लिए हर एक व्यक्ति को यह आदत बनानी चाहिए क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मानसिकता का विकास होता है। स्वच्छता व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्वच्छ और स्वच्छता के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर को कीटाणु, बैक्टीरिया और वायरस से बचा सकता है तथा रोगो से प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकता है। स्वच्छ रहने से संक्रमण का खतरा कम होता है और रोगो से बचाव में मदद मिलती है। स्वच्छ भारत अभियान एक महत्वपूर्ण अभियान है जो भारत को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने का लक्ष्य रखता है तथा पिछले दस वर्षो से सम्पूर्ण देश में स्वच्छता का अभियान निरतंर जारी है। सम्पूर्ण स्वच्छता जन भागीदारी से ही सम्भव है, स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नही है, अपितु देश के सभी नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, सभी को शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अभियान न केवल नागरिकों को स्वच्छता सम्बन्धी अच्छी आदतें अपनाने बल्कि हमारे देश की छवि स्वच्छता के लिए तत्परता से काम करने वाले देश के रूप में बनाने में भी मदद कर रहा है। अतः सभी को मिलकर देश को स्वच्छ व स्वस्थ रखने में अपना योगदान देना चाहिए। हम सब के स्वस्थ जीवन के लिए इस अभियान में हमे कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लेना चाहिए साथ ही हमें स्वच्छता को रोज की दिनचर्या में शामिल करना चाहिए ताकि स्वच्छ और स्वस्थ भारत का निर्माण हो सके। हम सभी को स्वच्छता का ध्येय, महत्व तथा जरूरत को समझना चाहिए क्योंकि स्वच्छता ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का मूलमंत्र है। विश्वविद्यालय को भी देश के इस स्वच्छता अभियान में अपना योगदान देना चाहिए तथा विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों, विभागों द्वारा अपने कार्य क्षेत्र में सफाई अभियान आयोजित कर स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही इस बाबत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर आम नागरिकों को स्वच्छता रखने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

आचार्य मनोज दीक्षित

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

पशुपालन मंत्री ने किया वेटरनरी संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों के साथ संवाद

समेकित एवं समुचित प्रयासों से राज्य में पशुपालन को मिलेगा बढ़ावा: माननीय पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में सोमवार को संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों के साथ माननीय पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत के साथ वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। संवाद कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए माननीय मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने कहा कि राजस्थान कृषि एवं पशुपालन प्रधान राज्य है। देश की जी.डी.पी. में पशुपालन का बहुत बड़ा योगदान है। राजस्थान सरकार का पशुपालन क्षेत्र के सुदृढ़ीकरण का हर संभव प्रयास रहेगा। माननीय पशुपालन मंत्री ने हाल ही में पशुचिकित्सकों की लम्बित भर्ती का जिक्र करते हुए कहा कि इससे पशुचिकित्सा क्षेत्र को स्वावलम्बन मिलेगा एवं पशुपालन क्षेत्र से जुड़े कार्यों का सुचारू संचालन होगा। माननीय मंत्री ने भविष्य में भी पशुचिकित्सकों, पशुपरिचरो एवं पशुधन सहायकों के रिक्त पदों को भरने के लिए भी आश्वासन दिया। पशुचिकित्सा क्षेत्र मोबाईल वेटरनरी यूनिट के संचालन, विश्वविद्यालय को भी पशुचिकित्सा हेतु निःशुल्क दवाईयाँ उपलब्ध करवाने, पशुचिकित्सालय एवं पशु उपकेन्द्रों को क्रमोन्त करने, वेटरनरी विद्यार्थियों के इन्टर्शिप मानदेय में बढ़ोत्तरी आदि विभिन्न मुद्दो के शीघ्र समाधान की संभावना व्यक्त की। माननीय मंत्री जी ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सभी मांगों को केन्द्र एवं राज्य सरकार के सम्मिलित एवं समुचित प्रयासों से पूरा करने की बात कही ताकि पशुपालन को बढ़ावा मिल सकें। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा बीकानेर की धरा का पशुपालन, गोपालन, देवस्थल एवं सांस्कृति संरक्षण में विशेष महत्व है। कुलपति आचार्य दीक्षित ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के पशुपालकों एवं पशुचिकित्सा के क्षेत्र में किये गये उत्कृष्ट कार्यों को बताया। कुलपति ने राज्य सरकार से विश्वविद्यालय के विकास एवं सुदृढ़ीकरण हेतु हर संभव प्रयास का भी आग्रह किया। संवाद कार्यक्रम के दौरान विधायक बीकानेर पश्चिम जेठानन्द व्यास, विधायक डूंगरगढ़ ताराचन्द सारस्वत, भाजपा जिलाध्यक्ष विजय आचार्य, प्रदेशाध्यक्ष भाजपा ओ.बी.सी. मोर्चा चंपालाल जी गेदर, उपस्थित रहे। संवाद कार्यक्रम को माननीय विधायक बीकानेर पश्चिम जेठानन्द व्यास ने सम्बोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार पशुपालन एवं पशुचिकित्सा को बढ़ावा देने हेतु हर सम्भव प्रयास कर रही है एवं भविष्य में भी इस क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जाने के हर सम्भव प्रयास की बात कही। विधायक डूंगरगढ़ श्री ताराचन्द सारस्वत ने मूक पशुओं की सेवा एवं चिकित्सा के कार्यों को पुण्य कार्य बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं पशुचिकित्सकों को सभी आवश्यक सुविधा उपलब्ध करवाये जाने की बात कही ताकि राज्य के पशुपालन को बढ़ावा मिल सके। वेटरनरी विश्वविद्यालय के टीचर एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने मंच के माध्यम से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की विभिन्न मांगों को मंत्री महोदय के समक्ष रखा। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने स्वागत भाषण दिया। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर 2025 में आयोजित होने वाले कुंभ के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में 3 अक्टूबर को गोलमेज सम्मेलन के आयोजन हेतु पोस्टर का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर, शिक्षक, विद्यार्थियों एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

उन्नत पशुपालन तकनीकों पर पशुपालक प्रशिक्षण

पशुपालकों द्वारा प्रचलित पद्धतियों के सकारात्मक रुझानों का विश्लेषण हमारी प्राथमिकता हो : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) के संयुक्त तत्वावधान में उन्नत पशुपालन तकनीक विषय पर हनुमानगढ़ जिले के अनुसूचित जाति वर्ग के पशुपालकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 2–6 सितम्बर, 2024 तक आयोजित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विकसित भारत की तर्ज पर पशुपालन के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर कार्य करना होगा। भारतीय कृषि एवं पशुपालन अथाह ज्ञान एवं नई खोजो की सभावनाओं से भरा है हमें पशुपालकों द्वारा प्रचलित पद्धतियों के सकारात्मक रूझानों का विशलेषण करके आगे बढ़ाना चाहिए। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में हनुमानगढ़ जिले के 30 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया जिनको विषय विशेषज्ञों द्वारा पशुपालन में प्रजनन, खाद्यान, रखरखाव एवं उन्नत स्वास्थ्य पर व्याख्यान एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने कहा कि पशुपालको को सुगम एवं कम लागत की तकनीकों का हस्तांतरण करना चाहिए ताकि उनका उपयोग कर आर्थिक लाभ ले सके। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह, परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक पीएमई प्रो. राहुल सिंह पाल, सहायक कृषि अधिकारी ओम प्रकाश सुथार एवं कृषि पर्यवेक्षक संजय कुमार तथा पशुपालक उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका पशुपालन नए आयाम के नवीन अंक का विमोचन किया गया। प्रशिक्षण के समापन सत्र में मुख्य अतिथि कैलाश जाजड़ा, अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ, बीकानेर ने पशुपालकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पशुपालकों को प्रशिक्षण के दौरान जो उन्नत पशुपालन की तकनीके सिखी है उनकों कृषि एवं पशुप्रबंधन हेतु क्रियान्वयन करें तभी इन तकनीकों एवं नवाचारों का समुचित लाभ मिल पायेगा। पशुपालकों को गांव में दूसरे किसानों को भी सिखे हुए ज्ञान को प्रसारित करना चाहिए ताकि पूरे गांव का विकास हो सके। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि टेक्नोलॉजी के युग में पशुपालन के क्षेत्र में परम्परागत तरिकों के साथ–साथ तकनीकी का उपभोग जरूरी हो गया है ताकि उत्पादन अधिक प्राप्त कर सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. देवी सिंह ने बताया कि प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान पशु अनुसंधान केन्द्र कोड़मदेसर, पशु अनुसंधान केन्द्र बीकानेर, उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र आदि का भ्रमण भी करवाया गया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को पशुओं में खान–पान, आवास प्रबंधन, प्रजनन व्यवस्था, संक्रामक बीमारियां से रोकथाम, पशु चारा उत्पादन, पशुओं का चयन आदि विषयों पर विषय विशेषज्ञों द्वारा 20 व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। प्रशिक्षण समापन सत्र में प्रशिक्षण प्रतिक्रिया एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पवन कुमार, सुखराम व सोहन लाल क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे।

पशु स्वास्थ्य से समझौता करके शुद्ध पशु उत्पादों की परिकल्पना संभव नहीं : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास बीकानेर एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में "पशु पोषण एवं पशु स्वास्थ्य की अभिनव तकनीकें एवं भविष्य दृष्टिकोण" विषय पर 24–26 सितम्बर तक ऑनलाइन मोड पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पशु आधारित खाद्य पदार्थों की मांग हमेशा से ही रही है। पशु स्वास्थ्य से समझौता करके शुद्ध पशु उत्पादों की परिकल्पना नहीं कर सकते। मानव एवं पशुओं में संक्रामक बीमारियों का प्रकोप भी हमारे लिए बहुत बडी चुनौती है। एकल स्वास्थ्य दृष्टिकोण, कृषि एवं पशुपालन विषयों पर समेकित शोध पर फोकस करके एवं नवीन अन्वेषकों एवं तकनीकों को हस्तांतरण से हम इन चुनौतियों का समाधान कर सकते है तथा उत्तम मानव एवं पशु स्वास्थ्य समाज को प्रदान कर सकते है। हमें भविष्य की आवश्यकताओं, संसाधनों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए नवीन अनुसंधानों एवं तकनीकों को विकसित करना होगा। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान देश के ख्याति प्राप्त आई.सी.ए.आर. इंस्टीट्यूट एवं विश्वविद्यालयों के विषय विशेषज्ञ पशु स्वास्थ्य एवं पशु पोषण के विभिन्न पहलुओं पर पशुचिकित्सकों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को व्याख्यान प्रदान किया जिनमें भारत में पशु आहार सुरक्षा और गुणवत्ता मूल्यांकन, पशु खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता, पोस्टबायोटिक, परिशुद्धता फीडिंग, पशु प्रजनन एवं उत्पादन में खाद्यान्न का महत्व, पोल्ट्री पोषण में प्रगति और भविष्य की दिशाएं, खाद्य अपशिष्ट का नवीन पशु आहार रणनीतियों के प्रबंधन, कृषि प्रसार में आधुनिकता आदि विषय विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। देश भर के लगभग 200 प्रतिभागी इस प्रशिक्षण में भाग लिये राष्ट्रीय संस्थान मैनेज हैदराबाद के उप–निदेशक डॉ. साहजी फंड ने बताया कि नई तकनीकों, प्रसार विधियों की जानकारी प्रदान करने हेतु इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम देश के अन्य विश्वविद्यालय एवं आई.सी.ए.आर. केन्द्रों पर भी चलाए जा रहे है ताकि देश भर के पशुपालकों को पशुपोषण, स्वास्थ्य, विपणन आदि में नई दशा एवं दिशाओं की जानकारी प्राप्त हो सकें।

पशुपालन मत्स्य एवं गौपालन विभाग के नए शासन सचिव डॉ. समित शर्मा

भारतीय प्रशासनिक सेवा–2004 बैच के राजस्थान केडर के अधिकारी डॉ. समित शर्मा ने शासन सचिव, पशुपालन, मत्स्य एवं गौ–पालन विभाग, राजस्थान सरकार का पदभार दिनांक 9 सितम्बर को ग्रहण किया है। इससे पूर्व डॉ. समित शर्मा शासन सचिव, जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी एवं भू–जल विभाग, राजस्थान, जयपुर के पद पर कार्यरत थे। डॉ. समित शर्मा सम्भागीय आयुक्त, जोधपुर एवं जयपुर, जिला कलेक्टर, चित्तौडगढ व नागौर, एन.आर.एच.एम. मिशन डायरेक्टर, जयपुर मेट्रो चैयरमैन, श्रम आयुक्त, आदि सहित कई अहम् पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके है। डॉ. शर्मा के मार्ग–दर्शन में राजस्थान प्रदेश पशुपालन व पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नए आयाम प्राप्त करेगा।

कृषि अनुसंधान में परिवर्तन एवं निजी क्षैत्र की भूमिका पर आयोजित परामर्श बैठक में वेटरनरी विश्वविद्यालय हुआ शामिल

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 3 सितम्बर को "कृषि अनुसंधान में परिवर्तन एवं निजी क्षेत्र की भूमिक बढ़ाने" विषय पर हाईब्रिड मोड़ पर हितकारकों की परामर्श बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने ऑनलाइन शिरकत की एवं बैठक के बाद विश्वविद्यालय के अधिकारियों से कृषि एवं पशुपालन अनुसंधानों में उत्पादकता बढ़ाने हेतु निजी क्षेत्र के संघठनों की भागीदारी, कृषि एवं पशुपालन अनुसंधान की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियों आदि विषयों पर चर्चा की व आवश्यक सुझाव एवं निर्देश दिए। बैठक को सम्बोधित करते हुए माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी ने किसानों की आवश्यकताओं, समस्याओं के अनुसार शोध में परिवर्तन करने, गुणवत्ता सुधार पर बल दिया। उन्होने रासायनिक खाद्य के अंधाधुंध उपयोग का रोकने एवं प्राकृतिक खेती की जरूरत को बल दिया। कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषक उत्पादक संगठनो (एफ.पी.ओ.) को सुदृढ़ करते हुए डोर स्टेप पर तकनीको के हस्तांतरण की बात कही। बैठक में डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव डेयर एवं महानिदेशक, आई. सी.ए.आर. ने बैठक का विषय प्रवर्तन किया। बैठक के प्रारम्भ में डॉ. देवेश चतुर्वेदी, सचिव डी.ए. और एफ.डब्लू. ने स्वागत उद्बोधन दिया। इस बैठक में भारत सरकार के सम्बधित विभागो, आई.सी.ए.आर. संस्थानों केन्द्रीय और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, निजी क्षेत्र के संगठनों, सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों सहित देशभर से हजार से ज्यादा प्रतिभागी शामिल हुए। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि बैठक में विश्वविद्यालय के प्रति–कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच, वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन. श्रृंगी, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई, परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू एवं निदेशक पी.एम.ई. प्रो. राहुल सिंह पाल उपस्थित रहे। इस बैठक में कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर (हनुमानगढ़) के प्रभारी अधिकारी डॉ. सुरेश चन्द काटंवा सहित प्रगतिशील किसान घनश्याम ज्याणी, मुखराम, चन्द्रपाल और नरेश कुमार भी ऑनलाइन शामिल हुए।

विश्व रेबीज दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण एवं तकनीकी केंद्र व पशु जन स्वास्थ्य व जनपदिक विभाग द्वारा 28 सितम्बर को विश्व रेबीज दिवस पर हिमांशु बाल विद्यालय, खतूरिया कॉलोनी के विद्यार्थियों हेतु एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र प्रभारी डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया की विश्व रेबीज दिवस 2024 की थीम "ब्रेकिंग रेबीज बाउंड्रीज़" पर विद्यार्थियों को रेबीज (हिडकाव) के मुख्यतः कारण, निदान व टीकाकरण के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. दीपिका ने बताया कि 90 प्रतिशत रेबीज (हिडकाव) का कारण मुखतः कुत्ते के काटने व उसकी लार से फैलता है इसी के साथ अन्य कारण जैसे बिल्ली, चमगादड़, बंदर व जंगली जानवर से भी होता है । हम आमजन में जागरूकता उत्पन्न करके इस रोग से बचाव कर सकते है। जागरूकता कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ. देवेन्द्र चौधरी एवं डॉ. वैशाली ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के दौरान केशवा यादव व स्नातकोत्तर अध्यनरत जयंत स्वामी व अन्य शिक्षण गण उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 9, 12, 17, 21, 23 एवं 28 सितम्बर को गांव छाप्पर, पिचकराई ताल, देवानिया, भामरा, नेठवा एवं भलाऊ ताल गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 10, 11, 17, 20, 21 एवं 23 सितम्बर को गांव धर्मपुरा, लुधाबाई, हबीबपुर, पाली, लीली एवं भौसिगां गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 113 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4, 21 एवं 24 सितम्बर को गांव दरबारी खेड़ा, तेंलपुर एवं वलदरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 79 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 9, 11, 18, 20, 23 एवं 25 सितम्बर को गांव बरगू, पोलाई खुर्द, कुराड़ी, चार, कराड़िया एवं मुण्डला गांवों में तथा 4 एवं 26 सितम्बर केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 200 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 19, 24 एवं 28 सितम्बर को गांव हरियासर, सहनीवाला एवं ढाणी भोपालाराम में तथा 10 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 18 सितम्बर को गांव चक खेरा में तथा दिनांक 26 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 67 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 9, 10, 17, 27 एवं 30 सितम्बर को गांव मिडांसरी, दुज्जार, झेकरिया, डाबड़ी एवं गिरदोदा मिढा गांवों में तथा दिनांक 18 एवं 25 सितमबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 12 एवं 28 सितम्बर को गांव अरनिया एवं पचेवर गांवों में तथा दिनांक 6 एवं 10 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 12, 19, 20, 23 एवं 27 सितम्बर को गांव टेहरी का पुरा, नौरगांबाद, लथुपुरा, कुम्हेरी, ठोठी का पुरा एवं लरैठा गांवों में तथा दिनांक 28 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 3, 4, 7, 11, 17, 19 एवं 23 सितम्बर को सोती, बुढाना, क्यास्थपुरा, बग्गड़, गुमानसर, जीववाली ढाणी एवं हमीरवास गांवों में तथा दिनांक 10 सितमबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 159 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 18 सितम्बर को गांव 25 एन.टी.आर तथा दिनांक 5–11, 23–24 एवं 26–30 सितम्बर को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 103 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

रेबीज (हिड़काव) से बचाव ही उपचार

रेबीज एक विषाणु जनित बीमारी है जो रेबिड़ोविरडी परिवार के लैसा वायरस से होता है। यह एक न्यूरोट्रॉपिक वायरस है जो पशु व मनुष्य की केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है। मानव में इसे हाइड्रोफोबिया या जलकांटा भी कहते हैं। रेबीज रोग के प्रारम्भिक लक्षणों में बुखार आना और एक्सपोजर के स्थल पर झुनझुनी पैदा होना शामिल हो सकते हैं। इन लक्षणों के बाद और भी कई लक्षण प्रकट होते हैं जैसे अनियंत्रित उत्तेजना, पानी से डर, शरीर के अंगों को हिलाने में असमर्थता, भ्रम और होश खो देना। एक बार लक्षण प्रकट होने के बाद रेबीज का परिणाम लगभग मौत ही है। रोग संक्रमण और लक्षणों की शुरूआत के बीच की अवधि आमतौर पर एक से तीन महीने होती है। कभी–कभी इससे और अधिक भी हो सकती है। रेबीज के कारण विश्व स्तर पर प्रति वर्ष लगभग 26,000 से 55,000 लोगों की मृत्यु हो जाती है। इन में से 95 प्रतिशत से अधिक मौते एशिया और अफ्रीका देशों में होती है। रेबीज 150 से अधिक देशों में और अंटार्कटिका के अतिरिक्त सभी महाद्वीपों पर मौजूद है। 3 अरब से अधिक लोग दुनिया के उन क्षेत्रों में रहते हैं जहां रेबीज होता है। यूरोप और ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश क्षेत्रों में रेबीज केवल चमगादड़ों में ही मौजूद होता है। भारत में हर साल 18,000–20,000 लोगों की मौत रेबीज के कारण हो जाती है। भारत में रिपोर्ट किए गए रेबीज के लगभग 30–60 प्रतिशत मामले और मौतें 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में होती है। विश्वभर में भारत मे मानव रेबीज की दर सबसे अधिक है, जिसका मुख्य कारण आवारा श्वान है।

कारण :– रेबीज होने का सबसे आम कारण कुत्ते का काटना (एशिया और अफ्रीका) है। यह संक्रमित श्वान/पशु की लार या मस्तिष्क/तंत्रिका तंत्र के ऊतकों के साथ सीधे संपर्क (जैसे आंखों, नाक या मुंह में टूटी हुई त्वचा या श्लेष्मा झिल्ली) के माध्यम से फैलता है।

रोग की अवस्था :–

रेबीज रोग सामान्यत : चार चरणों में प्रकट होता है–

1. **इन्क्यूबेशन (ऊष्मायन) :** रेबीज वायरस शरीर में कई दिनों से लेकर हफ्तों तक रह सकता है, उसके बाद यह तंत्रिका तंत्र में पहुंच जाता है। इस दौरान कोई लक्षण नहीं दिखते।
2. **प्रोड्रोमल चरण :** रेबीज वायरस तंत्रिका कोशिकाओं के माध्यम से प्रभावित पशु या मनुष्य के मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में जाता है, जिससे तंत्रिका क्षति होती है। प्रोड्रोमल चरण तब शुरू होता है जब रेबीज वायरस तंत्रिका तंत्र में प्रवेश करता है। प्रतिरक्षा प्रणाली वापस लड़ने की कोशिश करती है, जिससे फ्लू जैसे लक्षण पैदा होते हैं। तंत्रिका क्षति के कारण जहां काटा गया है वहां झुनझुनी, दर्द या सुन्नता पैदा हो सकती है। यह चरण 2 से 10 दिनों तक रहता है। जब रेबीज इस चरण में पहुंच जाता है तो कोई प्रभावी उपचार नहीं होता है।
3. **तीव्र तंत्रिका संबंधी चरण :** इस चरण में रेबीज वायरस मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देता है। लगभग दो–तिहाई लोगों में उग्र रेबीज होता है, जिसमें आक्रामकता, दौरे और प्रलाप जैसे लक्षण होते हैं। कईयों में लकवाग्रस्त रेबीज होता है,

जिसमें काटने के घाव से लेकर शरीर के बाकी हिस्सों में कमजोरी और लकवा बढ़ता है।

4. **प्रगाढ़ बेहोशी :** रेबीज संक्रमण के अंतिम चरण में रोगी पशु या मनुष्य कोमा में चले जाते हैं। तथा अंततः मृत्यु हो जाती है।

लक्षण :–

- बुखार, थकान, मांसपेशियों में दर्द।
- उत्तेजना और आक्रामकता।
- बैचेनी, दौरे, मतिभ्रम।
- हृदय की धड़कन तेज होना।
- तेज सांस लेना।
- अत्यधिक लार का स्त्राव होना।
- चेहरे का पक्षाघात।
- पानी पीने का डर (हाइड्रोफोबिया)।
- पक्षाघात।
- काटने के घाव में जलन, खुजली, झुनझुनी, दर्द।
- प्रगाढ़ बेहोशी।

प्रबंधन और उपचार :–

रेबीज एक विषाणु जनित रोग है अतः इसका कोई उपचार उपलब्ध नहीं है। रेबीज के संपर्क में आने पर (संक्रमित श्वान ने काटा है या उसके संपर्क में आए हैं) उस घाव को साबुन और पानी से धीरे–धीरे अच्छी तरह से लगभग 15 मिनट तक साफ करें। पोवीडोन आयोडीन या डिटर्जेंट से धोएं साथ ही रेबीज के बचाव के लिए उसी दिन ही टीकाकरण करावें। रेबीज से ग्रसित श्वान के काटने पर 0, 3, 7, 14, 30 एवं 90 दिन के अन्तराल पर टीकाकरण अवश्य करावें।

रोकथाम :–

पालतू पशुओं के टीकाकरण अवश्य करावें (कुत्ते, बिल्लियां इत्यादि)। पालतू पशुओं को बिना निगरानी के खुला न घुमने दें।

यदि किसी श्वान/जंगली जानवर ने काट लिया है या खरोंच दिया है या किसी अन्य तरीके से रेबीज के संपर्क में आए हैं, तो जल्द से जल्द पशुचिकित्सक तथा मानव चिकित्सक से सम्पर्क कर प्राथमिक उपचार तथा टीकाकरण करावें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

गर्भित पशु की बच्चेदानी में घुमाव की रोकथाम

बच्चेदानी में घुमाव : बच्चे दानी में घुमाव एक गंभीर आपात स्थिति है, जिसमें गर्भाशय अपनी धूरी पर घूम जाता है। यह आमतौर पर गर्भावस्था के अंतिम चरण में होता है, और अगर इस स्थिति का समय पर निदान नहीं किया गया तो यह पशु और उसके बच्चे की जान के लिए खतरा पैदा कर सकता है। यदि यह ब्यांत के समय हो तो प्रसव संभव नहीं होता क्योंकि बच्चेदानी का मुंह पूरी तरह खुल नहीं पाता। यह स्थिति पशु पर अत्यधिक तनाव पैदा करती है।

कारण :

1. गर्भ में बच्चे की असामान्य हलचल
2. पशु के व्यायाम में कमी
3. अन्य पशु से अचानक धक्का लगना या किचड़ में फिसलना
4. परिवहन के दौरान उबड़–खाबड़ रास्ते
5. गर्भकाल के अंतिम समय में पानी में तैरना, जो भैंसों में सामान्य है

पहचान :

1. पेट में अचानक दर्द होना प्रथम लक्षण है।
2. पशु बेचैन हो जाता है तथा वह पेट पर बार–बार लात मारता है।
3. बार–बार उठना–बैठना।
4. चारा छोड़ देना और जुगाली न करना।
5. यदि पशु ब्यांत के करीब है, तो बच्चे का बाहर न आ पाना।

निदान और उपचार :

पशु में समस्या शुरू होने के 24 घंटे के भीतर पशुचिकित्सक से संपर्क करना आवश्यक है। जानकारी की कमी के कारण, पशुपालक अक्सर दर्द निवारक गोलियां देकर इलाज करने की कोशिश करते हैं, जो गलत है। गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनों में विशेष ध्यान रखना चाहिए, और कोई भी समस्या होने पर तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए। समय पर उपचार करवाने पर पशु के ठीक होने की संभावना 80 प्रतिशत से अधिक होती है।

उपचार प्रक्रिया :

पशु चिकित्सक द्वारा बच्चेदानी की जांच के बाद पशु को सही दिशा में घुमा कर बच्चेदानी की सही/सामान्य व्यवस्था में लाया जा सकता हैं। यदि बच्चेदानी का मुंह खुला हो और पशु प्रसव की अवस्था में हो तो तुरंत बच्चे को बाहर निकाला जा सकता है। यदि सभी उपाय विफल हो जाऐं तो सिजेरियन ऑपरेशन बच्चेदानी से संबधित अंतिम विकल्प होता है।

रोकथाम रणनीतियाँ :

- ❖ **व्यायाम :** नियमित और व्यवस्थित व्यायाम से बच्चेदानी से संबधित मांसपेशियों को मजबूत और सक्रिय रखा जा सकता है।
- ❖ **उचित पोषण :** गर्भावस्था के दौरान संतुलित आहार देना चाहिए।
- ❖ **समय पर पहचान :** जल्दी पहचान से नुकसान को कम किया जा सकता है।
- ❖ **उचित प्रबंधन :** गर्भित पशु की साफ–सफाई, समतल भूमि पर रखे एवं अनावश्यक परिवहन से बचाना चाहिए।

सार : गर्भाशय में मरोड़ एक गर्भित पशु के लिए एक गंभीर चुनौती है। समय पर पहचान और उचित प्रबंधन से इसकी गंभीरता को कम किया जा सकता है, जिससे पशु की प्रजनन क्षमता बनी रहती है। ब्यांत के अंतिम समय में पशु की विशेष देखभाल करनी चाहिए और पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनों में विशेष ध्यान रखना चाहिए और कोई भी समस्या होने पर तुरंत निकटतम पशुचिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

डॉ. देवेन्द्र कुमार, सहायक आचार्य
पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

सफलता की कहानी

शिवचंद ने परंपरागत पशुपालन को बनाया आर्थिक सम्बल का जरिया

पशुपालन व्यवसाय हमेशा किसानों का कृषि के साथ–साथ आय का एक अच्छा साधन रहा है। ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में स्वःरोजगार के लिए अपार संभावनाएं लिए हुए है। पशुपालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख व्यवसाय के रूप में उभरा है। बारानी खेती, कम वर्षा और मानसून आधारित खेती के कारण पशुपालन किसानों का आजीविका का आधार है। ऐसे ही चूरू जिले के सरदारशहर तहसील के गांव– कानरवास के निवासी शिवचंद परंपरागत पशुपालन व्यवसाय से जुड़े हुए है। शिवचंद के पास 10 बीघा जमीन है जिस पर वह वर्षा आधारित खेती करते हैं। पर्याप्त आय नहीं होने के कारण पशुपालन को अपनी आय का स्त्रोत बनाया। शिवचंद पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ से व्यक्तिगत एवं दूरभाष के माध्यम से पशुपालन से सम्बन्धित नवीन एवं उन्नत वैज्ञानिक जानकारी लेते रहते हैं साथ ही पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा आयोजित विभिन्न पशुपालन प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण, टीकाकरण, मौसमी बीमारियों के बचाव, कृत्रिम गर्भाधान तकनीक, पशु बांझपन एवं संतुलित पशु आहार आदि की जानकारियां लेते रहते हैं। शिवचंद ने शुरूआत में 4 बकरियों से पशुपालन व्यवसाय प्रारम्भ किया। वर्तमान में इनके पास 25 बकरी, 3 गायें एवं 5 भैंस हैं। गौवंश के पालन पोषण के लिए घर का खेत होने से कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। इस व्यवसाय में न केवल स्वंय बल्कि इनकी पत्नी भी पूरा सहयोग करती है। इन पशुओं से प्रतिदिन 75 लीटर दूध का उत्पादन होता है। इस व्यवसाय से विशुद्व आय प्राप्त कर वे आराम से जीवन यापन कर रहे हैं। इस प्रकार शिवचंद लगभग 3–4 लाख रूपये प्रतिवर्ष आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। गांव में रोजगार के साधन कम होने पर भी शिवचंद गांव में रहकर उन्नत तकनीक से पशुपालन करने का अच्छा उदाहरण दिया है। इनका कहना है कि पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा नियमित रूप से दी जाने वाली नवीन जानकारियां जैसे टीकारण, पशु रोगों एवं पशुपोषण सम्बन्धित जानकारियां उनके लिए काफी फायदेमंद रहती है और अन्य पशुपालक एवं किसानों को भी पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ से पशुपालन सम्बन्धित जानकारियां लेने हेतु प्रेरित करते हैं।

सम्पर्क: शिवचंद
गांव-कानरवास, सरदारशहर, चूरू (मो. : 6367168971)

निदेशक की कलम से...

पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन के लिए पशुकल्याण व पशु अधिकारों के प्रति जागरूकता आवश्यक

मानव जीवन में पशुओं का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हमारे औद्योगिक और कृषि क्षेत्रों से लेकर आदिवासी समुदायों तक पशुओं का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव है। पशु, मनुष्य के जीवन में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मानव सभ्यता की शुरूआत से ही पशु मानव जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है तथा मनुष्य का जीवन काफी हद तक पशु–पक्षियों पर निर्भर करता है। पशुओं के कल्याण और संरक्षण को बढ़ावा देना, पशुओं के संरक्षण और उनकी चिकित्सा को बढ़ावा देना, जीव–जंतुओं को सम्मान और उनका हक दिलाना, प्राकृतिक जंगलो को पशुओं के लिए संरक्षण करना, पशुओं की स्थिति को बेहतर कर उनकी भावनाओं का सम्मान करना, पशुओं के प्रति लोगों में क्रुरता और हीन भावना को मिटाने तथा इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए प्रति वर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जाता है, क्योंकि मनुष्य के जीवन में पशुओं का बड़ा महत्व है तथा इनके बिना मानव जीवन का अस्तित्व ही नहीं है। विश्व पशु दिवस को मनाने का मूल उद्देश्य पशुओं की रक्षा करने के साथ–साथ मनुष्यों और पशुओं के सम्बन्धों को मजबूत करना है। सबसे पहले विश्व पशु दिवस वर्ष 1925 में जर्मनी के बर्लिन में आयोजित किया गया था लेकिन वर्ष 1929 से यह दिवस 4 अक्टूबर के दिन मनाया जाने लगा। पशु हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसके माध्यम से इकोसिस्टम में संतुलन बना रहता है। पृथ्वी पर जीवन को बरकरार रखने के लिए पशुओं और मनुष्य के बीच संतुलन होना बहुत आवश्यक है क्योंकि पशु खाद्य श्रृखंला और इकोसिस्टम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मनुष्य शुरू से ही स्वार्थी प्राणी रहा है, जिसने सभी सीमाओं को लांघकर पृथ्वी का पूर्ण शोषण किया है तथा पृथ्वी पर उपस्थित कई प्राणियों व प्राकृतिक तत्वों के साथ–साथ पेड़–पौधों को भी नष्ट किया है जिससे कुछ प्रजातियां विलुप्त हो गई है तथा कुछ विलुप्त होने के कगार पर है। भारतीय संविधान में भी पशुओं को कई अधिकार दिये गये है। नैतिकता की दृष्टि से हमें पशुओं के दर्द और उनकी पीड़ा के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए। पशुओं के प्रति प्रकट किये जाने वाले घृणास्पद व्यवहार, आवारा पशुओं के प्रति किये जाने वाले व्यवहार, अमानवीय व्यवहार आदि के प्रति लोगों को जागरूक करना चाहिए। अतः हम सब मिलकर पशु कल्याण तथा पशुओं के प्रति प्यार व सम्मान प्रकट करने के लिए व्यक्तियों, समूहों और संगठनों को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि इन मूक प्राणियों का जीवन संरक्षक व बेहतर हो सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया